बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- balaknamaeditor@gmail.com

अंक-99 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अक्टूबर-नवंबर 2021 | मूल्य - 5 रूपए

आखिर क्यों बढ़ रही हैं बाल मजदूरी ?

बातूनी रिपोर्टर उषा, रशीदा, भारती, जयकिशन, नूरजहाँ व रिपोर्टर किशन,आंचल संगीता व अन्य

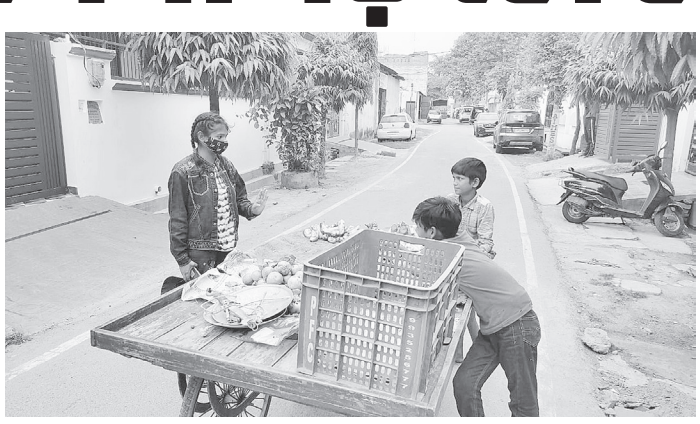

आइए जानते हैं कि जब से कोरोना महामारी पूरे विश्व में फैली है तब से सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ा हैं। इसके बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। बालकनामा रिपोर्टर ने दिल्ली नोयडा, गुरुग्राम, लखनऊ, आगरा आदि शहरों में बच्चों से बात किया और पाया कि पिछले सालों की तुलना में कोरोना काल में बाल मजदूरी काफी बढ़ गयी है। जो बच्चे कोरोना महामारी से पहले स्कूल जाकर शिक्षा प्राप्त करते थे वे भी अब काम में लिप्त हो गए हैं। जब हमारे पत्रकारों ने नोएडा,लखनऊ,वेस्ट दिल्ली, साउथ दिल्ली, आगरा जैसे विभिन्न स्थानों पर सड़क और कामकाजी बच्चों से बातचीत किया तो राजू (परिवर्तित नाम) ने बताया "मेरा 11 वर्ष का एक दोस्त है जो आस-पास के मार्केट में मोजे बेचने का काम करता है और वह अपने माता-पिता के साथ नोएडा में झुग्गी-झोपड़ी में रहता है और वह कोरोना महामारी से पहले स्कूल जाकर शिक्षा प्राप्त करता था परंतु जब से कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन गया तब से उसके परिजन और बालक को काफी परेशानियों का सामना भी करना पड़ा रहा हैं। बालक का स्कूल भी छूट गए और अब वह पूरे दिन सिर्फ जुराब बेचने का कार्य करने लगा। लॉकडाउन में जुराब बेचने से जो पैसे कमाता था उसी से घर का खर्चा चलता हैं। जब कुछ दिन बाद लॉकडाउन खुलना शुरू हुआ तो पता चला कि अब धीरे-धीरे स्कूल भी खुल रहे हैं तो फिर से मेरा दोस्त स्कूल जाने लगा। परंतु कोरोना महामारी कम ना होने के कारण फिर से स्कूल बंद हो गए और फिर मेरे दोस्त ने पढ़ाई करना बंद कर दिया। अब वह वर्तमान में कभी कभार स्कूल जाता है और स्कूल से आने के बाद आस-पास की मार्केट में जुराब बेचने के लिए भी जाता है और ऐसे ही उसका घर का गुजारा चल रहा है। ऐसे ही बातचीत करने के दौरान विकास

(परिवर्तित नाम)ने बताया, "हम नोएडा में कच्ची झुग्गी में रहते हैं और यहां पर लगभग 10 बच्चे भीख मांगने का कार्य करते हैं। इतना सुनकर हमारे पत्रकार उन 10 बच्चों में से कुछ बच्चों के पास पहुंचे और विस्तार से जानकारी प्राप्त किया। बच्चों ने बताया हम अपने आस-पास की ट्रैफिक लाइट पर भीख मांगने का कार्य करते हैं। हमारे पत्रकारों ने बच्चों से पूछा कि 'परन्तु आप भीख क्यों मांगते है?' बच्चों में बताया कि उनके माता पिता को देहाड़ी के हिसाब से पैसे मिलते हैं और कुछ भी कार्य करके रोजाना जितना पैसे कमाते हैं वह रोजाना की जरूरतों में खर्च हो जाते हैं कोरोना महामारी आने के बाद काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा जैसे -घर में पैसों की कमी, राशन ना होना आदि इस कारण हम रेड लाइट पर भीख मांगने का कार्य करते हैं। हमारे पत्रकारों ने दक्षिणी दिल्ली की बस्तियों में रहने वाले बच्चों से बातचीत किया तो 17 वर्ष रागिनी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि "मेरे घर में 3 सदस्य हैं मेरे पिताजी, माताजी और मैं। हम दक्षिणी दिल्ली में एक बस्ती में किराए की झुग्गी बनाकर रहते हैं और मेरी सौतेली माता है और पिताजी को नशा करने की आदत है और वे अक्सर अत्यधिक मात्रा में दारू का सेवन करते हैं और कुछ काम काज भी नहीं करते इस कारण मैं बेलदारी का काम काज करने के लिए जाती हूँ। सुबह 8:00 बजे कामकाज के लिए निकल जाती हूँ और शाम के 6:00 बजे घर पर वापस आती हूं और मुझे रोजाना बेलदारी के 400 रुपए मिलते हैं जिससे मैं अपने घर का खर्चा चलाती हूं। हमारे पत्रकारों ने रागिनी से पूछा कि आप स्कूल क्यों नहीं जा पाते हों? रागिनी ने बताया "मैं अपने कामकाज के लिए सुबह ही घर से निकल जाती हूं और फिर शाम को देर से घर वापस आती हूँ इस कारण चाहते हुए भी मैं शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती हूँ।अगर मैं कामकाज नहीं करूंगी तो घर का भी खर्चा नहीं चलेगा इस कारण मुझे कामकाज करना पड़ता है। ऐसे ही हमारे पत्रकार कई ऐसे बच्चे से मिले जो बाल मजदूरी में लिप्त हो गए हैं।

बातूनी रिपोर्टर सुनील ने बताया कि उसकी झुग्गी के पास ही एक 12 वर्षीय बच्चा जो पहले स्कूल जाता था। अब वह गाड़ी की दुकान पर गाड़ी बनाना सीख रहा है जिसके लिए वह सुबह 8:00 बजे जाता है और शाम को 5:00 तक आता है और पूरा दिन जितनी अच्छी बिक्री हो जाती है उतने अच्छे उसको पैसे मिल जाते हैं जैसे कभी कम बिक्री होती है तो उसको 20 रुपए मिलते हैं और अगर कभी ज्यादा बिक्री हो जाती है तो उसको 50 रुपए मिल जाते हैं। यही सभी बच्चे इस महामारी की वजह से ही बाल मजदूरी ओर काफी तेजी से बढ़ रहे हैं बच्चे कामकाज नही करना चाहते हैं कि लेकिन परिवार की स्थिति इस प्रकार हैं कि उन्हें मजबूरन कामकाज करना पड़ता हैं । यह सभी बच्चे चाहते हैं कि हम सभी बच्चों को पढाई-लिखाई और खेलकूद का मौका मिले।

गंदे पानी से बच्चों को अनेक प्रकार की बीमारियों का खतरा

बातूनी रिपोर्टर माही व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

बालकनामा रिपोर्टर ने लखनऊ की एक बस्ती में बच्चों के साथ रिपोर्टर बैठक का आयोजन किया और बच्चों से विस्तार से बातचीत किया और उनकी समस्या जानने की कोशिश किया तो बच्चों ने बताया कि 'जब भी बारिश होती है तो हमारे घर के बाहर बहुत ज्यादा पानी भर जाता है और पानी जमा हो जाने के कारण उन पर बहुत सारे कीटाणु पनपते है और डेंगू तथा मलेरिया बीमारियों के कारण समुदाय के लोगों का अक्सर तबियत खराब रहती है और उनका स्वास्थ्य भी खराब रहता है साथ ही साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घट जाती है। कुत्ते और सूअर बारिश के कारण जमा हुए पानी में बैठे रहते

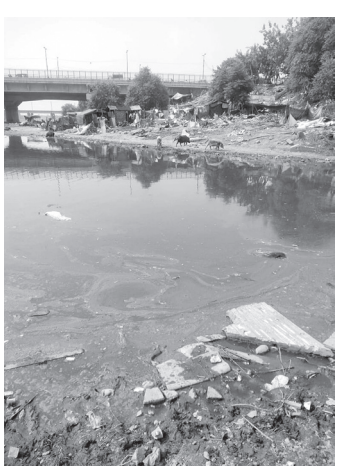

हैं, जिससे इन जानवरों पर भी कीटाणु चिपक जाते है, जिससे ये जानवर भी काफी परेशानियों का सामना करते हैं। और तो और भीगे हुए कुत्ते और सूअर दिन भर बस्ती में इधर उधर घूमते रहते है और लोगों के घर के दरवाजों पर जाकर बैठ जाते है और कई बार मौका पाकर घर के अंदर घुस जाते है जिससे घरों में भी काफी बदबू और गंदगी फैल जाती है। गंदे और बदबूदार वातावरण में रहने से बच्चों के स्वास्थ्य पर भी बहुत बुरा असर पड़ता है और अनेक प्रकार की बिमारियों के होने का भी खतरा रहता है। बारिश का पानी जमा रहने से पूरे समुदाय में काफी मच्छर मंडराते है और लोगों को रात भर सोने नहीं देते हैं। मच्छरों के काटने से बच्चों के शरीर पर छोटे-छोटे दाने भी हो जाते हैं और दानों के होने से शरीर में बहुत खुजली होती है और बच्चों का काफी तकलीफ झेलना पड़ता है।

वायु प्रदूषण से बेहाल हुए सड़क और कामकाजी बच्चे

रिपोर्टर विजय

देश की राजधानी दिल्ली समेत गुरुग्राम में प्रदूषण बढ़ने के कारण सभी स्कूल को बंद कर दिया गया है। देश अभी कोरोना महामारी के लॉक डाउन से उभर ही रहा था कि तभी प्रदूषण के बढ़ते स्तर के कारण एक और लॉक डाउन की सम्भावना ने दस्तक दे दी। प्रदूषण इतना ज्यादा बढ़ चुका है कि लोगों को अपने घरों में मास्क पहनकर रहना पड़ता है और साँस लेने में तकलीफ हो रही है जिसका असर उनके फेफड़ों पर पड़ता है साथ ही साथ बहुत जल्द थकान महसूस होने लगती हैं। प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि छठ पूजा के दौरान देश की राजधानी मे यमुना नदी का पानी इतना जहरीला हो गया कि इसमें बर्फ के जैसे दिखने वाले झाग बनने लगा। त्यौहार पर लोगों ने आस्था के नाम पर इसी गंदे पानी में डुबकी लगायी और विभिन्न प्रयासों के बाद भी यमुना नदी साफ नहीं हो पायी है। सरकार के विभिन्न प्रयासों के बाद भी नदियों का पानी साफ नहीं हो पाया है। दिन प्रतिदिन बढ़ते वाहनों की संख्या भी प्रदूषण का प्रमुख कारण है। वाहनों का निकलता धुआ वायु प्रदूषण को बढ़ाता है, जिससे सड़को पर रहने वाले परिवारों को सबसे ज्यादा परेशनियों का सामना करना पड़ रहा हैं।

रक्षक ही क्यों बन गए दुःख का कारण?

बातूनी रिपोर्टर प्रिती व रिपोर्टर रवि

कानूनी प्रक्रिया में समय तो लगता है लेकिन इंसाफ जरूर मिलता है । लेकिन क्या हो जब लोगों की सुरक्षा करने वाले ही उन्हें प्रताड़ित करने पर उतर आए और पीड़ित लोगों को शिकायत करने पर भी इन्साफ ना मिले। आप सोच रहे होंगे कि हम यह बात क्यों कर रहे हैं? हम आपको बताना चाहते हैं कि यह बात हम यूं ही नहीं कह रहे है। बल्कि इस बात के पीछे का कारण आप सुनेंगे तो आपको महसूस होगा कि इस तरह की समस्याओं में रहने वाले बच्चों के लिए सरकार और पुलिस प्रशासन को कुछ अलग तरह की योजनाएं बनानी चाहिए या फिर पुलिस को नियम अनुसार काम करना चाहिए। तो चलिए इस खबर के बारे में विस्तार से जानते हैं। यह खबर ईस्ट दिल्ली के सफेदा झुग्गियों में रहने वाली 13 वर्षीय सोनम (परिवर्तित नाम) जो कि हमारी बालक नामा की बातूनी रिपोर्टर है, द्वारा साझा की गई है।सोनम बताती हैं कि "उनके यहां पर झुग्गियां काफी छोटी-छोटी है और हर परिवार में लगभग 7 से 8 लोग रहते हैं जो कि दिन में तो किसी तरह से अपना समय बाहर बैठकर या इधर-उधर घूम के एवं अपने काम करके बिता लेते हैं। परंतु रात में सभी परिवार के लोगों को सोने में काफी मुश्किल होती है और इस वजह से कई लोग अपने घरों से बाहर निकलकर बस स्टॉप, फुटपाथ और सड़क के आसपास सोने के लिए आ जाते हैं। लेकिन वहां पर रात में गश्त पर घूमने वाले पुलिस कर्मी सभी को लाठी-डंडों से मार मार के भगाते हैं। सबसे ज्यादा दुखद बात तो यह है कि वह लोग बच्चों पर भी दया नहीं करते और उन्हें भी डंडों से मारते हैं। अभी हाल ही में कुछ दिन पहले एक 15 वर्षीय लड़के को उन्होंने डंडों से काफी मारा और वहां से भगा दिया जब उस लड़के के परिवार वाले शिकायत करने के लिए पुलिस थाने गए तो वहां पर कोई कार्रवाई नहीं हुई बल्कि उन्हें वहां से वापस घर भगा दिया गया।आप ही बताइए कि क्या पुलिस वालों को इस तरह से बच्चों के साथ ऐसा करना चाहिए?

कड़ाके की सर्दी शुरू होते ही सड़क एवं कामकाजी बच्चे हुए बेहाल!

रिपोर्टर विजय

गुरुग्राम में जहां एक तरफ ऊंची इमारतें हैं वहीं दूसरी तरफ एक बहुत बड़ी संख्या में झुग्गी बस्तियां है जहां पर हजारों सड़क और कामकाजी परिवार बच्चों के साथ जीवन यापन करते हैं` शहरीकरण होने के कारण गुरुग्राम के सभी ट्रैफिक सिग्नल व फ्लाईओवर के नीचे जीवन यापन कर रहे सड़क एवं कामकाजी बच्चों की परिस्थिति भी दयनीय हो रही है सेक्टर 56 की ट्रैफिक लाइट के पास लगभग 30-40 बच्चे सड़क पर जीवन यापन करते हैं और ट्रैफिक सिग्नल पर खिलौने आदि सामान बेचने का काम करते हैं` सर्दी आने पर यह सभी बच्चे ठंड में ठिठुरते हुए पूरे दिन गुब्बारे ० खिलौने बेचते हैं ना पैर में चप्पल ना बदन पर कपड़े यह सभी बच्चे पूरे दिन काम करते हैं ताकि गुजर बसर हो जाऐ 10-12 आयु के बच्चे भी ट्रैफिक सिग्नल के अलग-अलग हिस्सों पर भीख मांगना या फिर गुब्बारे बेचने या फिर छोटे-मोटे खिलौने बेचना इत्यादि कार्य में लिप्त है! गांव ढंडेरा में रहने वाले 11 वर्षीय राजू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि "मैं मार्किट एरिया में जूता पालिश करता हूं लेकिन मेरे कपड़े गंदे कपड़े होने के कारण लोग मेरे पास जूता पोलिश नहीं करवाते है इसलिए मैंने अब कबाड़ा बीनने का काम शुरू कर दिया है` पिछले 2 साल से ढंडेरा गाँव के आसपास के मार्केट में मैं काम करता हूं और यहीं रहता हूँ`" सेक्टर 46 स्ट्रीट मार्केट में भी बच्चों का जमावड़ा देखने को मिलता है यह छोटे मासूम बच्चे या तो भीख मांगते हैं या फिर कबाड़ा बीनने का काम करते हैं यह सभी बच्चे आसपास की झुग्गी बस्ती से आकर यहां पर दिनभर लोगों से खाने को मांगते हैं या फिर भीख मांगते हैं जब इन से स्कूल जाने के सवाल पर बातचीत की गई तो यह बच्चे बात करने से कतरा रहे थे और कोई भी सही से बात नहीं कर रहे थे`

खेल से खतरा

रिपोर्टर किशन

बालकनामा पत्रकार ने साउथ दिल्ली में आउटरीच के दौरान देखा कि जिन बच्चों को स्कूल में जाकर पढ़ाई करनी चाहिए, वह बच्चे अपने घर पर बैठकर फोन पर फ्री फायर खेलने में व्यस्त रहते हैं। जब बालकनामा पत्रकार ने बच्चों से बात किया तो उन्होंने बताया कि 'हमे फ्री फायर खेलना बहुत अच्छा लगता है और हमें खेलने में बहुत मजा आता है। इसीलिए हम ज्यादातर फ्री फायर ही खेलते हैं।' बालक ने यह भी बताया कि 'मैं इस फ्री फायर के चक्कर में अपने घर पर खाना भी नहीं खा पाते हैं और स्कूल जाने का मन भी नहीं करता है।' पत्रकार ने बच्चे से पूछा कि फ्री फायर खेलने से आप सभी को कुछ पैसे भी मिलते हैं क्या? बच्चों ने बताया कि ऐसा कोई बात नही हैं। हमे इस खेल को खेलने पर कोई पैसा नही मिले हैं।' लेकिन दुःख कि बात यह हैं बच्चे इस खेल में इतना लिप्त हो गए हैं कि अपनी सेहत का ख्याल नही रखते हैं और और पूरा दिन इस खेल में लगे रहते हैं। इस खेल की वजह से इनकी आंखों की रोशनी भी कमजोर होने लगी है। हमें भय हैं कि कही ये बच्चों को इतनी छोटी उम्र में ही चश्मा न लग आये। बच्चों से बातचीत करने पर यह भी पता चला कि बच्चे पहले इस खेल को ऐसे मजे के लिए खेलते थे लेकिन अब सुनने में आ रहे हैं कि इस खेल पर बच्चे पैसे भी लगाने लगे जैसे कि दो बच्चे खेल रहे हैं। जो जीतेगे उसको 20 या जितने का शर्त लगा हैं उतना पैसे मिलेगा। इस वजह से माता-पिता भी परेशान हैं कि कही बच्चा इस खेल की वजह से उनका बच्चा गलत संगत में न पड़ जाये। माता पिता की गुजारिश है कि इस खेल को बंद कर दिया जाए ताकि बच्चे सुरशित रहे और पढाई लिखाई करें ।

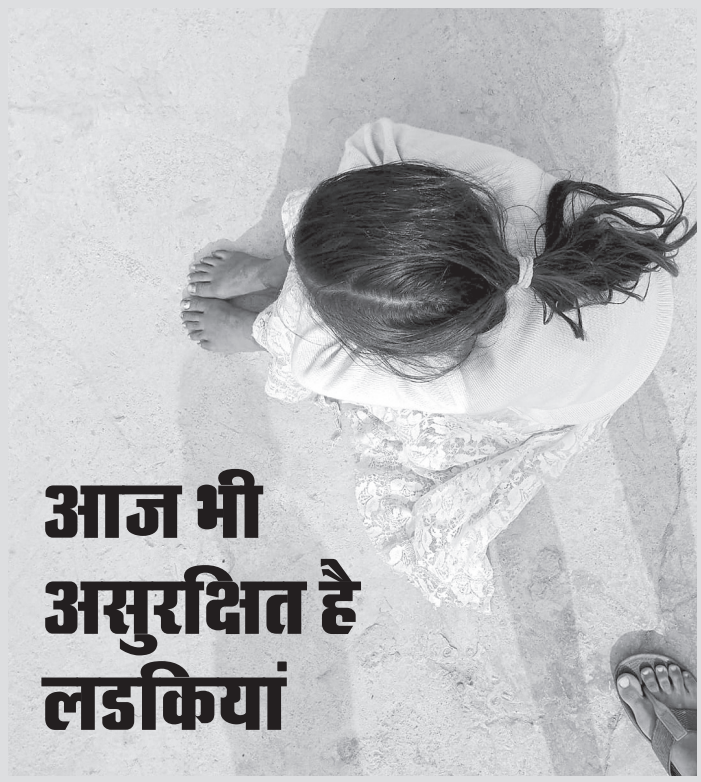

आज भी असुरक्षित है लडकियां

बातूनी रिपोर्टर फरजाना व रिपोर्टर शम्भू

यह खबर नोएडा की एक झुग्गी झोपडी से है जिसका नाम हम गोपनीय रख रहे हैं`बालकनामा के बातूनी रिपोर्टर सीमा (परिवर्तित नाम) ने यह जानकारी दिया कि इस झुग्गी बस्ती में लड़कियों का घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया है। जहां एक तरफ समाज में लड़कियों को समान अधिकार देने की बात कही जाती है वहीं आज भी बहुत सी लड़कियां भेदभाव का शिकार हो रही हैं` बातूनी रिपोर्टर ने बताया कि हम लड़कियां बाहर निकलती है तो अन्य घरों के पुरुष भी बाहर ही खड़े होते है और गाली-गलौज से बात करते है` ये सभी लोग नशे में रहते है और जुआ-ताश खेलते है। इस कारण लडकियों को उनके अभिभावक बाहर निकलने पर पाबंदी लगाते है। लडकियों को एजुकेशन सेंटर या स्कूल जाने मैं भी परेशानी होती है। उनको पढ़ाई करने के लिए इन सभी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

नगर निगम की लापरवाही से बच्चे हो सकते है भयानक बीमारी का शिकार

रिपोर्टर संगीता

अभी कुछ दिन पहले लखनऊ में बहुत तेज से बारिश हुई थी, जिससे विनायक पुरम में तेज बारिश के कारण पुल टूट कर गिर गया। पुल का किनारा टूटने से पुल के पास एक बड़ा गड्ढा हो गया है, जिसमे बारिश के दौरान काफी पानी भर जाता है और बच्चे गंदे पानी को बोतल में भरकर खेलते है और साथ ही उस गंदे पानी में स्नान भी करते है। लेकिन बच्चे इस बात से अनजान है कि इस गड्ढे में सीवर और सड़क की गंदगी का पानी मिला होता है और तेज बारिश होने पर ये गड्ढा पानी से भर जाता है और बच्चे उस पानी से नहाते है। बच्चों को यह नहीं पता है कि अगर गलती से भी उनके मुंह में यह गंदा पानी चला गया तो उनका स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है या गड्ढे में ज्यादा पानी भरा होने के कारण वे डूब भी सकते है। और गंदे पानी की वजह से कई प्रकार की बीमारियां भी हो सकती हैं। इसके साथ ही साथ गड्ढे में अनेक प्रकार के जहरीले जीव-जंतु भी रहते हैं, जो बच्चों को काट भी सकते है। लेकिन बच्चे इस बात को नहीं मानते हैं और नगर निगम की तरफ से भी पुल और गड्ढे की मरम्मत के लिए अभी तक कोई कदम नहीं उठाया गया है।

माता पिता दिन भर काम के सिलसिले में बाहर रहते है और बच्चों को ऐसा कार्य करने से रोकने वाला या समझने वाला कोई नहीं होता है। बच्चे इसी बात का फायदा उठाते हैं और अगर कोई ऐसा करने से मना भी करता है तो बच्चें उनकी बातें नहीं मानते है और नाले में खेलते रहते हैं। क्योंकि उनके पास मनोरंजन का कोई अन्य साधन नहीं है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

क्यों छूट गया स्कूल से नाता?

रिपोर्टर आंचल

जैसा कि आप सभी को पता है कि बच्चों को सही समय पर शिक्षा प्रदान करना कितना महत्वपूर्ण है और सभी माता पिता चाहते है कि उनके बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ाई करके अपने सपने पूरे करे। लेकिन कुछ बच्चे है जो गरीबी और बेघर होने के कारण मजबूरी में दिन रात कार्य करते है ताकि वे अपना और अपने परिवार को एक वक्त का खाना उपलब्ध करा सके। ये खबर लखनऊ की एक बस्ती से है। जब बालकनामा रिपोर्टर ने बस्ती में स्पोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया और बच्चों से चर्चा किया तो बच्चों ने अपनी समस्या बताते हुए साझा किया कि इस बस्ती बच्चे घर घर जाकर कूड़ा लेने का काम करते है। उसके बाद वो कूड़े को अलग अलग करके

जरुरत का अगर कुछ सामान ले लेते है और फिर व्ही सामान कम दामों पर बेच देते है। इस काम से बच्चों को जितना भी पैसा कुछ पैसे तो वे अपने घर पर दे देते है और कुछ पैसे अपने इस्तेमाल के लिए रख लेते हैं। जब बालकनामा रिपोर्टर में बच्चों से पूछा कि वे सब स्कूल क्यों नहीं जाते तो बच्चों ने बताया कि 'हम बच्चे अपने घर का खर्च चलाएं या स्कूल जाए और न ही हमारे पास इतना पैसे है कि दिन भर बिना काम किये हम खाना खा पाए इसलिए हम काम करते है।' सुबह हम घर घर जाकर कूड़ा लेने जाते है इसलिए स्कुल नहीं जा पाते है और यह काम हमे मजबूरी में करना पड़ता है। हम पढ़ना तो चाहते हैं लेकिन घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब होने के होने के कारण हम पढ़ने नहीं जा पाते हैं। ये सोचने वाली बात है कि जहाँ एक ओर सरकार बच्चों के लिये मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था कर रही है। वहीं आज भी परिवार की दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण बच्चें पढ़ाई-लिखाई से दूर बाल मजदूरी में संलिप्त कर रहें है।

बाहर के जंक फूड कहीं न कर दे बच्चों पर अटैक

रिपोर्टर संगीता

यह जानकारी आपके पास होगी कि कोरोना महामारी जब से हमारे देश में आई है तब से लेकर आज भी हम सभी को कोई न कोई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा हैं। लेकिन अब जैसा की आपको भी पता है अब संक्रमण की दर कम होने लगी है और अब लॉक डाउन भी पूरी तरह खुल गया है। इसी बीच सड़क एवं कामकाजी बच्चे बाहर के जंक फूड को अपने दिनचर्या में शामिल कर वह अपने स्वास्थ्य को बर्बाद कर रहे है। जैसे कि आप को भी पता है कि जंक फूड आदि चीजें ज्यादातर मैदे की बनी होती है और मैदे का अत्यधिक सेवन किडनी के लिए बहुत नुक्सान देह है। क्योंकि मैदा आंतों पर चिपक जाता है जिससे मोटापे के साथ ही साथ अन्य तरह की बीमारियां हो जाती हैं। पर यह बात बच्चे नहीं समझते है। यह ही नहीं साथ में कुछ बच्चों ने यह भी कहा कि 'इतने दिनों के बाद लॉक डाउन डाउन खुला है इसलिए हम इन दिनों का आनंद उठाना चाहते है कल को क्या पता की फिर से कोरोना महामारी का संक्रमण बढ़ जाये।'

अभी यह हालत है तो बाद में क्या होगा?

रिपोर्टर आंचल

गर्मी के मौसम में गर्मी हमें जीने नहीं देती और अब ठंड के मौसम में लगता ठंड भी सड़क और कामकाजी बच्चों को नहीं जीने देगी , जैसा की आपको भी पता है जैसे-जैसे दिन बदल रहे हैं उसी के साथ ठंड भी बढ़ती जा रही है । मोटे मोटे शब्दों में कहें तो अब अत्यधिक ठंडी का आगमन शुरू होने लगा है। यह तो आपको भी पता है कि जिसके सर के ऊपर छत होती है उन्हें सड़क और झोपड़ी में रहने वाले बच्चों की तुलना में कम कठिनाई का सामना करना पड़ता है। लेकिन सड़क और कामकाजी बच्चे तो खुले आसमान के नीचे व्यतीत करते हैं और अगर कभी वे कहीं पर अपने रहने का ठिकाना बनाते हैं वह भी कोई ज्यादा दिन टिकाऊ नहीं होता। यह खबर डालीगंज बस्ती में रहने वाली बच्चों की है जैसा कि हाल ही में आपको यह जानकारी दी गई थी कि जहां पर ये बच्चे झोपडी बनाकर रहते थे वह निगम द्वारा तोड़ दी गयी हैं जिसके कारण इन बच्चों और उनके परिवार का बहुत ही नुकसान हो हुआ। जब बालकनामा रिपोर्टर ने उन बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराई और मीटिंग कराने के दौरान उनसे यह पूछा कि 'बच्चों ठंडी आने वाली है तो उसके लिए आपने क्या तैयारियां की है?' तो बच्चों ने यह बहुत ही निराश होकर यह उत्तर दिया कि 'दीदी जब हमारी झोपड़ी उजड़ गई थी और हमारे सारे कपड़े-सामान आदि काफी बर्बाद हो गए थे जिस बक्से में ठंडी के कपड़े रखे थे वह बक्सा टूट गया है। हमें नहीं लगता कि हम इस ठण्ड को सहन कर पाएंगे।' साथ ही साथ कुछ बच्चों ने यह भी बोला कि 'हम खुली झोपड़ी में रहते हैं जिसके कारण हमें बहुत ठंडी लगती है इसीलिए जो हमारे पास खराब कपड़े होते हैं इनको हम जला के अपने हाथ पैर सेंकते हैं ताकि हमें ठंड कम लगे। अब सबसे बड़ी समस्या और प्रश्न यह है कि जब ठण्ड अत्यधिक बढ़ती जाएगी तब इन बच्चों का क्या होगा?

खुले स्थान पर कूड़ा फेंकने के लिए बच्चों को बनाया जाता हैं मोहरा

बातूनी रिपोर्टर सोनी व रिपोर्टर किशन

आप तो एमसीडी का मतलब जानते ही होंगे एमसीडी का मतलब म्युनिसिपल कारपोरेशन और दिल्ली (नगर निगम) जो दिल्ली के 9 जिलों में विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने के लिए जिम्मेदार है। हमारे पत्रकारों ने दिल्ली और आसपास के इलाकों के कुछ स्थान पर दौरा किया और इस दौरान बच्चों से भी बातचीत किया और उनकी समस्याओं को भी जानने की कोशिश किया। क्या आप जानना चाहेंगे कि बच्चों ने क्या साझा किया? तो चलिए विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं 13 वर्षीय बालक ने बताया कि "आप तो जानते ही हैं हम परदेसी लोग हैं और हम लोग अपने गांव से शहरों में कमाने के लिए आते हैं और यहां पर किराए के कमरों या झुग्गी झोपड़ी में रहते हैं और कुछ ना कुछ कार्य करके अपना गुजारा करते हैं। हम जिस स्थान पर रहते हैं उस स्थान पर एमसीडी की गाड़ी तो आती है और जिस जिस स्थान पर गाड़ी आती है वहां पर रहने वाले व्यक्ति लोग अपना कूड़ा कचड़ा एमसीडी के वाहन में डाल देते हैं। परंतु समस्या यह है यह गांव काफी बड़ा है और इस कारण एमसीडी की गाड़ी छोटी छोटी गलियों में कूड़ा लेने के लिए नहीं आते हैं। यदि हम बाहर से कुछ भी खाने पीने का सामान लेकर आते हैं तो कूड़ा तो अपने आप ही हो जाता है और जो एमसीडी की तरफ से रिक्शा लेकर आते हैं। वह लोग नाली का ही कूड़ा कचरा उठाते हैं और यदि हम इन को अपना कूड़ा देते हैं तो यह लोग अधिक मात्रा में कूड़ा नहीं लेते हैं। और यह लोग भी खाली स्थानों पर कूड़ा डाल देते हैं इस कारण घर में अधिक मात्रा में कूड़ा इकट्ठा हो जाता है, और मच्छर भी पनपने लगते हैं। मजबूरी के कारण हमें सरकारी जगह को मोहरा बनाना पड़ता है। अब वहां पर भी कूड़ा फेंकने पर 500 रुपए का जुमार्ना है और पकड़े जाने पर कानूनी कार्रवाई का भी प्रावधान है।

एक जोड़ी चप्पल की कीमत नहीं चुका पाते हैं माता-पिता

बातूनी रिपोर्टर चाँद व रिपोर्टर आंचल

परेशानियां तो सबके पास ही होती हैं और किसी ना किसी तरह से हम उसका हल भी निकाल लेते हैं। यह खबर लखनऊ में एक बस्ती में रहने वाले हमारे कामकाजी बच्चों की है। जब बालकनामा रिपोर्टर ने जब बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग किया और साथ ही साथ कम्युनिटी विजिट किया तो कम्युनिटी विजिट के दौरान उसने यह देखा कि कुछ बच्चें टूटी चप्पल में कील फंसा कर इसको पहन कर घूम रहे थे। जब बालकनामा रिपोर्टर ने उन बच्चों से बात किया और पूछा कि वे चप्पल में कील फंसा कर क्यों पहने हुए हैं?

बालकनामा रिपोर्टर ने बात आगे बढ़ाते हुए पूछा कि ऐसे चप्पल पहनने से तो आप बच्चों को चोट भी लग सकती है और आपको चलने-फिरने में दिक्कत भी हो सकती है? कुछ बच्चे टूटी चप्पल पहनने से होने वाली समस्याओं से सहमत हो रहे थे जबकि कुछ बच्चे इस बात से असहमत भी थे।

तभी बालकनामा रिपोर्टर ने उन बच्चों से बातचीत किया जो टूटी चप्पल पहनने से होने वाली समस्याओं से सहमत थे। बच्चों ने साझा किया कि 'वे टूटी चप्पल मजबूरी में पहनते है

और वे जब भी नई चप्पल खरीदते है तो वह कुछ ही दिनों में उनके पास इतने पैसे नहीं है कि वे किसी अच्छी कंपनी की चपल खरीद सके। इसीलिए ये बच्चे टूटी चप्पल को किसी कील या सेफ्टी पिन से जोड़कर पहनते है। चप्पल में कील या सेफ्टी पिन लगी होने से बहुत बार बच्चों के पैर में चोट भी लग जाती है और घाव बन जाता है जो बहुत दर्दपूर्ण होता है। कभी कभी तो सेफ्टी पिन या कील पैर में चुभ जाने से तुरंत ही खून भी निकलने लगता है और डॉक्टर के पास जाने की नौबत आ जाती है। फिर डॉक्टर की फीस, दवाई आदि में बहुत पैसे खर्च हो जाते हैं।' तभी बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से पूछा कि 'अगर डॉक्टर की फीस और दवाई में ही इतने पैसे खर्च होने हैं तो इससे बेहतर है कि आप उन पैसे से एक नई चप्पल ही खरीद ले ताकि चोट और घाव होने की नौबत ही न आएं?'

बच्चों ने बताया कि 'हमारे माता -पिता हमे नई चप्पल लेकर देते हैं लेकिन चप्पल कंपनी जा ब्रांड की न होने के कारण बहुत ही जल्दी टूट जाती है।' साथ ही साथ कुछ बच्चों से यह भी पता चला कि जब उन्हें पैर में कोई छोटी-मोटी चोट लग जाती है तो वह अपने अभिभावकों को नहीं बताते हैं और जब चोट अगर ज्यादा ही बढ़ जाती है तब ही वे अपने माता पिता को बताते है।

बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों को समझाते हुए यह कहा कि 'आप सब ऐसे टूटी चप्पल में कील या सेफ्टीपिन फंसा कर मत पहना करें क्योंकि लोहे की किसी भी वस्तु से चोट लगने टिटनेस का इंजेक्शन लगवाना पड़ता है और अगर समय पर इंजेक्शन नहीं लगवाया गया तो आपके पूरे शरीर में इन्फेक्शन हो सकता है।'

सभी बच्चों ने रिपोर्टर की बात को बहुत ध्यान से सुना और यह वादा किया कि वे अब दुबारा ऐसी गलती नहीं करेंगे।

मच्छरों ने मचाया हाहाकार मासूम बच्चों पर

बातूनी रिपोर्टर राजा व रिपोर्टर किशन

नोएडा में बालकनामा रिपोर्टर को बस्ती में विजिट दौरान पता चला कि यहां पर प्रॉपर्टी डीलर जमीन तो बिकवा देते हैं और जो व्यक्ति लोग जमीन खरीदते हैं वह अपने प्लॉट के चारों तरफ से ईट का घेरा बनाकर छोड़ देता हैं और हाल ही में लगातार बारिश होने के कारण उस प्लॉट में काफी पानी भर जाने के कारण वहां से काफी दिनों तक बदबू आती रही और मच्छर भी पनपने लगे इसके साथ ही साथ बस्ती के निवासी भी अपना घरेलू कूड़ा कचरा उस गड्ढे में फेंकने लगे जिसके कारण और अधिक मात्रा में मच्छर पनपने लगे, आसपास के वातावरण काफी हद तक खराब हो गया है जैसे कि बच्चे बीमार पड़ने लगे और जब अभिभावक बच्चों को डॉक्टर के पास ले गए तो अभिभावकों को पता चला कि बस्ती का वातावरण बहुत गन्दा होने के कारण मच्छरों की काटने से भी बच्चे बीमार भी पड़ रहे हैं।

बच्चों का कहना है कि 'हमारी बस्ती में एम.सी.डी वाहन न आने के कारण आस-पास के निवासी लोग उस गड्ढे में घरेलू कूड़ा-कचरा फेंकते हैं जिसके कारण बस्ती में बहुत मच्छर पनपते हैं और जब हम बच्चे खाना-खाते हैं तो मच्छर और मक्खी खाने पर आकर बैठ जाते हैं और मल मूत्र भी कर देते हैं और वही खाना हमारे पेट में जाता है और जिसके कारण हम बीमार भी पड़ रहे हैं।'

10 वर्षीय प्रीति (परिवर्तित नाम) ने बताया कि 'हमारी बस्ती में एम. सी.डी वाहन नहीं आते हैं अगर कूड़ा गाडी रोजाना इस एरिया में आएंगे तो हो सकता है लोग कूड़ा बाहर खुले में न फेंककर उस गाड़ी में डाले और हमे ये समस्याओं का सामना न करना पड़े।'

हम लड़कियों को क्यों नहीं मिलता बराबरी का दर्जा?

रिपोर्टर किशन

अक्सर यह बात आपने भी सुनी होगा कि लड़कियां सिर्फ घर के काम और कोठियों में झाड़ू पोछा और खाना बनाते हुए अच्छी लगती है, उनके हाथ में कॉपी पेंसिल देने की कोई जरूरत नहीं है। ऐसा बर्ताव लड़कियों के ही साथ क्यों होता है? ऐसा व्यवहार लड़कों के साथ क्यों नहीं किया जाता ? क्या समाज लड़कियों का भविष्य बनाएगा? समाज कहता है कि अगर लड़की 14 -15 साल की हो जाये तो उसके हाथ पीले करके उसको दूसरे घर भेज देना चाहिए?

जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने लखनऊ में बच्चों से बातचीत किया तो उन बच्चों का यह कहना था कि जब कोई लड़की पढ़ाई करने के लिए बात करती है व अपना भविष्य उज्जवल बनाने के लिए बात करती है तो उसे रोक क्यों दिया जाता है? यह अधिकार क्या सिर्फ लड़कों को दिए गए हैं कि वही सिर्फ पढ़ाई करेंगे? जैसा कि आपको भी पता है कि पिछले लगभग 2 साल महामारी के कारण स्कूल भी बंद थे और बच्चे एक लम्बे अंतराल तक शिक्षा से वंचित रहे और इसी बीच बहुत से माता पिता ने बहुत छोटी उम्र में ही अपनी बेटियो की शादी कर दिया। ताकि शादी- बारात में ज्यादा खर्चा न हो और न ही ज्यादा मेहमान आएं। लेकिन अभिभावकों ने एक बार भी अपनी बेटियों से यह नहीं पूछा क्या वे पढ़ना-लिखना चाहती हैं? यह सब बातें बेटियों से माता पिता ने पूछना जरूरी नहीं समझा और उनकी शादी कर दी गई। लेकिन बस्तियों में ऐसा होता देखकर अन्य लड़कियां भयभीत है कि अगर वे बाहर काम करके पैसे घर पर नहीं दे पायेगी तो उनकी भी छोटी उम्र में शादी करा दिया जायेगा। सड़क और कामकाजी लड़कियां न चाहते हुए भी दिनभर कोठियों में नौकरानी के रूप में काम करती हैं ताकि उन्हें माता पिता जल्दी उनकी शादी न कराएं।

इसमें मेरी क्या गलती?

रिपोर्टर संगीता

यह तो आप भी जानते हैं कि पढ़ाई का हमारे जीवन में कितना महत्व है। तो आइये एक बार फिर से विस्तार से इस विषय पर खोज करते हुए इस बात की तह तक पहुँचते हैं। जब बालक नामा रिपोर्टर ने लखनऊ के एजुकेशन क्लब पर रिपोर्टर बैठक का आयोजन किया तभी यह देखा कि एक छोटे से बच्चे को उसके अभिभावक बहुत मार रहे हैं तभी बालक नामा रिपोर्ट ने उस बच्चे के अभिभावकों से बातचीत किया और उनसे पूछा कि 'आप इस छोटे से बच्चों को इतना क्यों मार रहे हैं?' तो उनके अभिभावक ने यह बताया कि 'यह पढ़ाई नहीं करता है इसलिए हम इसकी पिटाई कर रहे हैं।'

जब आसपास के रहने वाले बच्चों से हमारी बातचीत हुई तो पता चला

कि उनके अभिभावक पढ़े-लिखे नहीं है। इसीलिए उस बच्चे की भावनाओं को नहीं समझ रहे है। साथ साथ कुछ बच्चों ने यह भी बोला कि वह जब स्कूल से होमवर्क लेकर आता है तो उसे होमवर्क करने में बहुत ही दिक्कत होती है, जिसके कारण से वह अपनी क्लास में डांट खाता है। इसी के डर से वह स्कूल नहीं जाता है और वह धीरे-धीरे पढ़ाई को भी छोड़ दे रहा है। लेकिन क्या आपको यह पता है कि किसी भी समस्या का हल मार पीट से नहीं निकलता है पहले तो उस बच्चे के अभिभावक को उसे समझाना चाहिए और उसका कारण जानना चाहिए कि बच्चा पढ़ाई में अपना मन क्यों नहीं लगा रहा है क्योंकि बहुत से तरीके होते हैं किसी बच्चे को समझाने के लिए और सबसे अच्छी बात यह है कि हमें किसी भी बच्चे को प्यार से समझाना चाहिए। बच्चों को सही उम्र में पढ़ाई के अवसर मिलना बहुत ही जरूरी है ताकि उसका आने वाला भविष्य सुंदर बन सके और आने वाले समय में अगर बच्चा पढ़ाई नहीं कर पाया तो मजबूरी बच्चे को बाल मजदूरी करनी पड़ सकती है।

ना अपनी जमीं है ना अपना आसमान

बातूनी रिपोर्टर शैलेश व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

जब बालकनामा रिपोर्टर ने लखनऊ के कुछ एजुकेशन क्लब पर बच्चों के साथ बैठक का आयोजन किया और बच्चों से विस्तारपूर्वक बातचीत किया तथा उनकी समस्याएं जानने की कोशिश किया` तभी बच्चों ने अपनी समस्या पर चर्चा करते हुए बताया कि ह्लअभी कुछ दिन पहले नगर निगम कर्मचारी हमारी झोपड़ी तोड़ कर चले गए और उसी रात बहुत ज्यादा बारिश हो गयी जिसके कारण हम लोग पूरी रात एक मिनट भी सो नहीं पाए। पूरी रात सिर्फ बारिश से सामान बचाने ही बीत गयी लेकिन फिर भी राशन और कपड़े पूरी तरफ भीग गए`ह्व बच्चों के स्कूल बैग, कॉपी-किताबे आदि सभी खुले में रखे होने के कारण बारिश में

भीग कर खराब हो गयी जिसके कारण बच्चें और उनके माता पिता बहुत ही दुखी और परेशान है` समुदाय के लोग और माता पिता बहुत ही चिंचित है क्योंकि कोरोना माहवारी के समय से उनका काम छूट गया है और अभी भी फिर से काम शुरू नहीं है ऐसी परिस्थिति में वे बड़ी मुश्किलों से एक वक्त का खाना खा पाते हैं और दिन भर रोजगार की खोज में लगे रहते हैं` ऐसे मुश्किल परिस्थितियों में सर से छत छिन जाना किसी भयानक सपने से कम नहीं है` अगर ये लोग झोपड़ियों के बजाय किराए के कमरें में रहने की सोचते भी है तो उनका सपना टूट जाता है क्योंकि किराये के कमरों का प्रति माह 3000 का खर्चा है और ये गरीब लोग इतने पैसे कैसे जूता पाएंगे` ये लोगों के पास सर ढकने के लिए कहीं कोई जगह नहीं है जिससे परिवारों के बच्चे और महिलाओं को बहुत परेशानियां झेलनी पड़ती हैं` नगर निगम कमचार्री लोगों की झोपड़ी तोड़कर चले जाते हैं लेकिन बच्चें क्या करें क्योंकि इनके पास रहने के लिए कोई दूसरा स्थान भी नहीं हैं जिसके कारण मजबूरी में इसको टूटी हुई झोपड़ी को वहीं पर दोबारा से बनाना पड़ रहा है और बच्चों के मन में एक ही सवाल उठता हैं कि हम बच्चे आखिर कहां जाए ?

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

क्या हम सिर्फ काम करने के लिए बने हैं?

रिपोर्टर किशन

आजकल के युग में आप कहीं भी किसी भी गली मोहल्ले, मार्केट, होटल आदि में जाते होंगे आस पास से गुजरते होंगे तो आप यह जरूर देखते होंगे कि कोई ना कोई बच्चा किसी ना किसी मजबूरी से कोई ना कोई कार्य कर रहा है। यह खबर मड़ियांव बस्ती में रहने वाले बच्चों की है। जब बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत किया और उनकी समस्या जानने की कोशिश किया तो यह सामने आया कि कुछ बच्चे घर सजाने की सामग्री को एक ठेले में रखकर बेचने का काम कर रहे है` जब उन बच्चों से बालकनामा रिपोर्टर की बातचीत हुई तो यह पता चला कि पहले यह कार्य वह जब कोई त्यौहार आता था तभी करते लेकिन 1 दिन बेचने से कोई उनको मुनाफा नहीं होता था इसीलिए यह कार्य वह रोज करते हैं ताकि कुछ ना कुछ पैसे घर पर आते रहे। साथ ही साथ उन बच्चों ने बातचीत करने के दौरान अपनी भावनाओं को भी साझा किया और यह कहा कि 'हमें लगता है कि हम इसी तरह के काम करने के लिए ही बने हैं शिक्षा नाम का शब्द अब हमारी जिंदगी में कभी भी नहीं आ पाएगा क्योंकि जैसा कि आपको भी पता है कोरोना महामारी ने जो हमारा हाल किया है वह हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते।'

क्यों होता है हमारे साथ ऐसा?

बातूनी रिपोर्टर आरफीन व रिपोर्टर किशन

कुछ दूसरे राज्यों के लोग गांव से दिल्ली-नोएडा जैसे शहरों में अपने परिवार को लेकर पैसा कमाने के लिए आते हैं और कुछ न कुछ कार्य करके अपने परिवार का पेट पालते हैं। हमारे बालकनामा के पत्रकार ने दिल्ली के एक ऐसे ही स्थान पर राजू (परिवर्तित नाम) से बातचीत किया और उसकी समस्या जानने की कोशिश किया। राजू अपने पिताजी के साथ ठेली पर सब्जी बेचने का कार्य करता है, राजू के पास एक ठेली है जिस पर राजू और उसके पिताजी सब्जी लगाते हैं। सब्जी बेचने से जो आमदनी होती है उससे घर का खर्चा चलता है। राजू का कहना है कि "जिस स्थान पर हम रहते हैं वहां पर ठेली खड़ी करने के लिए कोई खाली स्थान नहीं है इस कारण हम अपने घर के अगल-बगल में ठेली को ताला लगाकर खडा करते हैं । कुछ लोग मेट्रो फ्लाईओवर के नीचे रहते हैं और वह काफी नशे करते हैं` जब उन लोगों के पास नशा करने के लिए रुपए नहीं होते हैं तो वह लोग रात में रिक्शा/ठेली चोरी कर लेते हैं। चोरी के दौरान ऐसे लगभग चार व्यक्ति होते हैं जिसमे से दो व्यक्ति आसपास में देखते हैं कि कोई आ तो नहीं रहा और बाकी दो व्यक्ति चोरी करने के कार्य में लगे रहते हैं। कभी-कभी चोरी करते हुए वह लोग पुलिस के हाथों पकड़े जाते हैं तो पुलिस इनको काफी मारते भी है और थाने ले जाने की धमकी देते हैं। यह लोग लेकिन पुलिस को कुछ रिश्वत देकर वहां से छूट जाते हैं। जिस व्यक्ति की ठेली चोरी हो जाती है तो उनको काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है उनके पास इतना पैसा नहीं होता है कि वह फिर से एक नई ठेली खरीद सकें और मजबूरन उन्हें टोकरी में सब्जी डालकर बेचना पड़ता है लेकिन ऐसे कार्य करने से उनकी आमदनी बहुत कम हो जाती है।"

कब तक हो पाएगी ट्रैफिक लाइट की सुविधा?

रिपोर्टर संगीता

यह खबर ईस्ट दिल्ली में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों की है।हमारे पत्रकारों ने ईस्ट दिल्ली में बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया जिसमें 35 बच्चों ने भागीदारी लिया और मीटिंग में अपनी समस्याओं को साझा किया। कुछ बच्चों ने बताया कि "जिस स्थान पर ये बच्चे अपनी झुग्गी झोपड़ी बना कर रहते हैं उसके बिलकुल नजदीक एक चौराहे है जहां पर ट्रैफिक लाइट की कोई सुविधा नहीं है जिस कारण बच्चों को रोड को पार करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है ` जब चारों तरफ से गाड़ियां आती हैं तो जाम भी लग जाता है ज्यादा जाम लगने के कारण कभी-कभी वहां से गाड़ियों को निकालना काफी मुश्किल होता है और गाड़ियों का काफी शोर-शराबा भी होता है` लोग आपस में लड़ाई झगड़ा करने भी लगते हैऔर इस दौरान हाथापाई भी करने लगते हैं ` ऐसे ही हमारे पत्रकार बच्चों से बात कर रहे थे तभी दूसरे बच्चे ने बताया कि "जहां पर यह चौराहे है मैं उसी के पास में मोटरसाइकिल रिपेयरिंग का काम करता हूं और चौराहे के पास में पुलिस चौकी भी है परंतु वहां पर कोई पुलिस ज्यादातर उपस्थित नहीं रहते हैं और अगर पुलिस आती भी है तो वे किसी काम से अन्य स्थान पर चले जाते है इस कारण चौराहे पर ज्यादातर एक्सीडेंट भी हो जाते हैं` लोग लड़ाई झगड़े में एक दूसरे का मोबाइल भी चोरी कर लेते हैं कुछ लोग रेड लाइट ना होने के कारण ऐसी परेशानियों का सामना करना पड़ता है` बच्चों का कहना है कि यहां पर जल्द से जल्द ट्रैफिक लाइट बने और ट्रैफिक पुलिस वाले लोग भी खड़े हो।

आखिर ऐसी क्या मजबूरी?

बातूनी रिपोर्टर भारती व रिपोर्टर शम्भू

यह खबर नोएडा की बस्तियों से है और बस्तियों का नाम हम गोपनीय है बालकनामा बातूनी रिपोर्टर काजल (परिवर्तित नाम) ने यह जानकारी दी है कि नोयडा की कुछ बेटियों में बाथरूम की सुविधा ना होने के कारण लड़कियां को खुले में नाले के किनारे नहाना पड़ता है जिससे आसपास के लोग भी लड़कियों को गलत नजरों से देखते हैं साथ ही इन बच्चियों को मजबूरी में खुले में नहाना पड़ता है बच्ची से बात करने के बाद यह पता चला कि इनको इसी मजबूरी का सामना पिछले दो-तीन वर्षो से करना पड़ रहा है क्योंकि इनके माता-पिता आसपास की कोठियों में काम करते हैं तथा यह लोग पास की झुग्गी में रहते हैं जहां पर बाथरूम के सुविधा उपलब्ध नहीं है और पिछले वर्ष आग लगने के कारण इन बच्चों की झुग्गियां जल गई थी जिससे और भी ज्यादा दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है तथा पैसे ना होने के कारण यह लोग बाथरूम नहीं बनवा पा रहे हैं तथा नाले के किनारे खुले में ऐसे में ही नहाते हैं।

रिपोर्टर किशन

दोस्तों अक्सर ही हम ढाबों, रेहड़ी-पटरी या दुकानों पर बच्चों को काम करते हुए देखते हैं। ऐसे बच्चो को देखते ही आप के मन में शायद कभी यह सवाल भी आया होगा कि आखिर पढ़ने लिखने की उम्र में यह बर्तन धोना या और भी कई प्रकार के कार्यों में क्यों लिप्त रहते है? बच्चो के माता पिता में शिक्षा का महत्व का आभाव होने के कारण ये बच्चे स्कूल जाने में असमर्थ रहते हैं। आज हम आपको ऐसे ही बच्चों के बारे में बताएंगे। यह बच्चे सराय काले खां में अलग अलग गलियों में अपने परिवारों के साथ किराए पर रहते हैं।जब बालकनामा बातूनी रिपोर्टर ने घरों में रहते हुए काम करने वाले बच्चों के बारे में और ज्यादा जानने के लिए कई मकानों में जा कर देखा तो कुछ मकानों में ही विजिट करने के पश्चात यह सामने आया कि हर मकान में 4 से 5 ऐसे बच्चे हैं जो की शोपीस बनाना, कपड़ों में सितारें लगाना एवं अन्य प्रकार के ऐसे कार्य करते हैं जिन्हें घर पर रह कर किया जा सकता है। इससे भी ज्यादा गंभीर बात यह है कि इन बच्चों में कई बच्चे ऐसे भी हैं जो कि स्कूल या किसी भी प्रकार से पढ़ाई लिखाई नहीं करते है। बीते लॉकडाउन की वजह से अभिभावकों का काम धंधा कम होने या बंद होने के कारण इस तरह के कामों को करने वाले बच्चों की संख्या में और भी वृद्धि हुई है। जिस तरह के काम यह बच्चे करते हैं इन कामों में छोटे छोटे सितारों, मोतियों आदि को कपड़े पर चिपकाना होता है जिससे कि आंखों पर काफी जोर पड़ता है और भविष्य में बच्चों की आंखों के लिए बिल्कुल भी सही नहीं है।

कड़ी मेहनत करने पर भी नही मिला उचित पैसा

रिपोर्टर पूनम

यह खबर आगरा शहर के उदा का नगला क्षेत्र में रहने वाले बच्चों से सम्बंधित है। जब बालकनामा पत्रकार ने आउटरीच के दौरान वहां के बच्चों से बातचीत किया तो बच्चों ने बताया कि इस इलाके में बच्चे ब्रेसलेट बनाने का कार्य करते हैं 14 वर्षीय राधिका (परिवर्तित नाम) ने बताया कि 'हमारे गांव में हमारे माता-पिता को कोई कामकाज नहीं मिलता है पूरा दिन काम के सिलसिले में घर से बाहर रेहना पड़ता हैं। जब हमारे माँ बाप को कोई काम नहीं मिलता तो वो निराश होकर घर वापस आ जाते है और इस ही कारणवश हमें काम करना पड़ता है हमें 24 ब्रेसलेट बनाने पर 10 रूपए मिलता है इसे बनाने में काफी मेहनत लगती है और इसे बनाने में बच्चों को काफी परेशानी होती है जैसे कि जब हम बच्चे ब्रेसलेट में औजारों से कड़ी जोड़ते हैं तो हमारे हाथों में छाले हो जाते हैं और औजारों के बीच मैं हमारी उंगली तक फस जाती है जब उसकी कड़ी हमारे हाथों मे चुभ जाती है तो काफी दर्द होता है जिससे टिटनेस फैलने का डर भी रहता है। यह सब परेशानीयों का सामना करके हम अपने घर का खर्चा चलाते हैं अगर हम बच्चे यह काम नहीं करेंगे तो हम अपना और अपने भाई बहनों का पेट कैसे भर पाएंगे यहां पर कोई रोजगार का साधन नहीं है इसी से अपने घर का गुजारा कर लेते हैं ।'

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

कुछ अलग तरीके से करेंगे हम खुशियों का स्वागत

रिपोर्टर संगीता

एक बार फिर यह साबित हुआ कि बुराई पर अच्छाई की जीत होती है। यह बात तो आपको भी पता है कि कोरोना महामारी ने पिछले दो सालों से हमारे देश में बहुत हाहाकार मचा के रखा है लेकिन अब कड़ी चुनौतियों से इस महामारी से जीत प्राप्त हो रही है इस खुशी को दोगुना करने के लिए हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने आने वाले त्यौहार में अपनी भावनाओं को एक ड्राइंग के माध्यम से प्रस्तुत किया, तो फिर चलिए उनकी खुशियों को बढ़ावा देते हुए और उनका उत्साह बढ़ाते हुए उनकी ओर जब हमारी बालकनामा रिपोर्टर ने श्रमविहार नगर में रहने वाले बच्चों से बातचीत करी और उनकी मन कि भावनाओ को जानने कि कोशिश कि और बच्चों से पूछा कि जैसा कि आपको भी पता है कि दिवाली त्यौहार आने वाला है, तो उसके लिए आपने कौन-कौन सी तैयारियां कि है? तो बच्चों ने बताया की दीदी हमारे पास इतने तो पैसे नहीं है कि हम बाजार से कुछ सजाने का

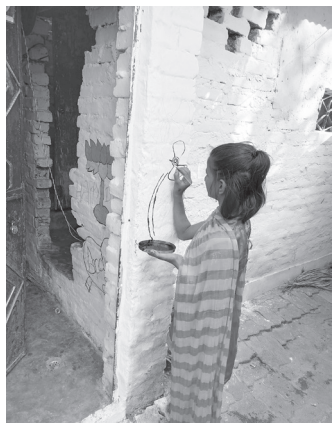

सामान ले आये और आपने घर को सजा सके, तो इसी लिए हम अपना घर हम वाटर कलर से ड्राइंग बना कर अपना घर सजा रहे है। ताकि हमारा घर नया और अच्छा लगे साथ ही साथ को बच्चों ने यह भी बताया कि दीदी अब काफी खुशी हो रही है कि धीरे-धीरे यह वायरस हमारे देश से निकलता जा रहा है और हम यह पूर्ण प्रयास करेंगे कि यह वायरस जल्दी से जल्दी खत्म हो जाए।

बदलता मौसम और बढ़ती परेशानियां

रिपोर्टर किशन

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि इन दिनों मौसम काफी बदलता रहता है। कभी बिन मौसम बरसात हो रही है तो कभी भीषण गर्मी पड़ने लगती है। इसके साथ ही अब धीरे-धीरे ठंड का मौसम आ रहा हैं। ठंड के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन में नए नए तरह की परेशानियाँ उत्पन होती जारही हैं जिसमें सबसे बड़ी चुनौती है कि आने वाले दिनों में सड़क एवं स्टेशनों पर जीवन व्यतीत करना। इसके अलावा और भी कई दिक्कतें हैं जैसे कि एक ही बिस्तर में कई बच्चों का साथ में सोना, कड़कड़ाती ठंड में कबाड़ा चुन्ना, बिना कम्बल के सोना, शादी पार्टी के कामों में जाना तथा रोजाना ले अन्य कामों में भी दिक्कत होती हैं। इसके अलावा पहनने के लिए गर्म कपड़ों का ना होना ये सभी समस्याएं सड़क एवं कामकाजी बच्चों की परेशानियों को और भी गंभीर कर देता हैं इस समस्या को और गहराई से जानने के लिए हमारे बातूनी रिपोर्टर ने सराय काले खां में रहने वाले जय (परिवर्तित नाम) से बातचीत किया तो उसने बताया कि ह्लवह पहले

निजामुद्दीन स्टेशन पर कबाड़ा चुनता था लेकिन अब वह शादी पार्टी में वेटर का काम करता है। जिसमें उसे भारी भारी मेज उठा कर सेट करना,समारोह में पकवान परोसना और जरूरत पड़ने पर बर्तन धोने जैसे काम करने पड़ते हैं। कई बार मेज उठाने से उसे चोट भी लग जाती है और ठंड की वजह से छोटी मोटी चोटें भी काफी तक्लीफ पहुंचाती है।ह्व इसके अलावा रिपोर्टर ने निजामुद्दीन स्टेशन के आसपास रहने वाले ओर कई बच्चों से भी बातचीत किया जो सड़क के किनारे या स्टेशन के आसपास जीवन व्यतीत करते रहते हैं। बच्चों ने बताया कि रात में सबसे ज्यादा दिक्कत होती है क्योंकि एक ही कंबल में कई सारे बच्चे मिलजुल कर सोते हैं और सर से सर जोड़कर सोने से ऊके बालों में जूं भी हो जाती है` इसके आलावा रात में ठंड लगने पर आपस में कम्बल खींचते हैं जिस वजह से सभी आधी-अधूरी नींद लें पाते है।

कूड़ा घर ना होने के कारण गरीब समुदाय के लोगों को झेलनी पड़ रही है समस्याएं

बातूनी रिपोर्टर कामिनी व रिपोर्टर संगीता

लखनऊ में जब बालकनामा रिपोर्टर ने एजुकेशन क्लब पर सड़क और कामकाजी बच्चों के साथ रिपोर्टर बैठक का आयोजन किया, और बच्चों का हालचाल लिया और उनसे बातचीत कियो जब विस्तार से उनकी समस्या जानने की कोशिश किया तो बातूनी रिपोर्टर कामिनी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि 'यहां पर कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ पर हम कूड़ा-कचरा डाल सके इसीलिए यहाँ पर सभी लोग ट्रेन की पटरियों के पीछे कूड़ा फेंक देते है और यहाँ पर कुछ लोग सूअर पाले हुए है। लेकिन दुःख कि बात यह हैं कि सूअर कूड़े को खोलकर इधर उधर फैला देते है जिससे और भी ज्यादा बदबू और गंदगी पूरे समुदाय में फैल जाता है` अगर हवा चलती है तो सड़े हुए कूड़े की बदबू चरों ओर फैल जाती है जिसके कारण हम बच्चों को सांस लेना मुश्किल हो जाता है और तो और हम लोगों को अपने मुंह में कपड़ा लगाना पड़ता है। बदबू के कारण हम बच्चे खाना भी ढंग से नहीं खा पाते हैं और जब बारिश होती है तो जितना भी कूड़ा जमा रहता हैं और भी ज्यादा फैलकर सड़ने लगता है जिसके कारण यहां पर बच्चों को बहुत ज्यादा समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं किइस क्षेत्र के आस पास जल्द से जल्द कूड़ा घर बनाया जाये ताकि सभी लोग कूड़ा-कचरा उसी कूड़ेदान में डाले और जानवर कूड़ा-कचरा को न फैलाए ।

घर की स्थिति नहीं बढ़ने दे रही है हमें आगे

बातूनी रिपोर्टर कामनी व रिपोर्टर संगीता

जब बालकनामा रिपोर्टर ने पूरनिया कांटेक्ट पॉइंट पर सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया और बच्चों से बातचीत की तो बातूनी रिपोर्टर कामिनी ने बताया कि 'दीदी हमारे स्कूल की तरफ एक बच्चा रहता है और वह समोसे बनाने का काम करता है और जब मैंने वहां जाकर उस बच्चे से पूछा कि 'आप स्कूल जाते हो?' तो उस बच्चे ने बताया कि 'नहीं दीदी हम स्कूल नहीं जाते हैं हम सिर्फ सुबह से शाम तक दुकान पर ही बैठकर समोसे बनाते हैं।'

हमारे बातूनी रिपोर्टर और विस्तार से उस बच्चे की समस्या जानने की कोशिश की तो उस बच्चे ने बताया कि "हमारे पापा बीमार रहते हैं औरउनका इलाज चलता है, हमारी मम्मी की भी तबियत ठीक नहीं रहती हैं और उनका भी थोड़ा बहुत इलाज चलता है। पापा कोई भी काम नहीं कर पाते हैं और मम्मी थोड़ा बहुत काम कर लेती है तो वह मंदिर पर जा कर माला बेचती हैं और मैं भी यहां पर समोसे बनाता हूँ ताकि घर का खर्चा पूरा करने में थोड़ी बहुत मदद हो जाये हमने अपनी मम्मी की मदद करने के लिए यह छोटी सी दुकान खोली हैं ताकि हम अपने पापा का इलाज भी करा लें और हम अपनी मम्मी की मदद भी कर सके` तब बातूनी रिपोर्टर ने उस बच्चे से पूछा कि "क्या आपका स्कूल जाने का मन नहीं होता है।?' तो उस बच्चे ने बताया कि "दीदी मेरा पढ़ने का तो बहुत मन करता है और स्कूल भी जाने का बहुत मन करता है पर हम मजबूर हैं हमारे घर की स्थिति बहुत ही ज्यादा खराब है जिसके कारण से हम स्कूल नहीं जा सकते है।"

काम नहीं करेंगे तो कैसे होगा हमारा गुजारा?

बातूनी रिपोर्टर आलिया व रिपोर्टर किशन

हमारे पत्रकार नोएडा और दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर दौरा करते हैं, और आपके सामने हर बार सड़क एवं कामकाजी बच्चों की परिस्थियाँ प्रस्तुत करते हैं। ऐसे ही हमारे पत्रकारों ने दिल्ली की बस्तियों में रहने वाले बच्चों से बातचीत किया और उनकी समस्या जानने का प्रयास किया।

10 वर्षीय रौशनी (परिवर्तित नाम) का परिवार मूलतः बिहार के रहने वाले हैं और वर्तमान में रौशनी अपने परिवार के साथ दिल्ली की झुग्गी में किराए के कमरे में अपना कामकाज करके दो वक्त की रोटी खा पाते हैं। रोशनी के पिताजी गार्ड की ड्यूटी करते हैं और माताजी फैक्ट्री में इमली बनाने का कार्य होता है।

फैक्ट्री में कामकाज करने वाले व्यक्ति लोग इमली लाकर घरों में सप्लाई करते हैं जिसमें रोशनी की माताजी भी यह कार्य करती है और इसके साथ ही साथ रोशनी भी अपनी माता जी के साथ इमली बनवाने का काम करती है।

रोशनी से विस्तार से जानकारी प्राप्त करने के दौरान रोशनी ने बताया कि ''जो व्यक्ति लोग फैक्ट्री से इमली हर एक घर में देने आते हैं वह लोग उस इमली को एक बोरे में लाते हैं उस बोरे में 9 किलो इमली और 1 किलो चीनी होती है और इमली आने के बाद घर में इस इमली को अच्छे से मिलाते हैं और फिर इस इमली का गोला बनाते हैं। गोला बनाने के बाद इस इमली के ऊपर चीनी डालते हैं और इसे अच्छे से मिला देते हैं और उस पूरे 9 किलो इमली 1 किलो चीनी को बनाने के बाद एक कट्टे पर 20 रुपए मिलते हैं, जोकि हम लोग 1 दिन में 5 बोरी की इमली तैयार कर देते हैं, और यह कार्य करने में काफी थक भी जाते हैं। इमली बनाने का भी मन नहीं करता है, यह कार्य करना हमारी मजबूरी है क्योंकि अगर हम काम नहीं करेंगे तो हमारे घर का गुजारा कैसे होगा?''

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आखिर शिक्षा से क्यों तोड़ना पड़ा नाता?

बातूनी रिपोर्टर कामनी व रिपोर्टर संगीता

लखनऊ के पूरनिया बस्ती में जब बालकनामा रिपोर्टर बैठक कराने के लिए गए, तो वहां पर देखा कि 5-6 वर्ष का बच्चा करतब दिखा रहा था` जब बालकनामा रिपोर्टर ने उस बच्चे से बात किया कि "आप स्कूल नहीं जाते हो क्या?" तो उस बच्चे ने बताया कि "नहीं मैं स्कूल नहीं जाता हूँ मैं चाचा के साथ मिलकर खेल-करतब दिखाते हैं। उस बच्चे से बात किया और पूछा कि "आप स्कूल क्यों नहीं जाते हो?" तो उस बच्चे ने बताया कि "दीदी हम स्कूल तो जाना चाहते हैं पर हमारे चाचा हमे स्कूल नहीं भेजते हैं और अगर हम स्कूल जाने की ज्यादा जिद्द करते है तो हमारे चाचा हमें मारते भी हैं जिसके डर से हम स्कूल नहीं जाते हैं।" चाचा जी हमे जब भी बोलते हैं तो हमें उनके साथ खेल दिखाने जाना पड़ता है और अगर हम खेल दिखाने नहीं जाएंगे तो हमारे घर का खर्चा नहीं चलेगा और हमारे घर में खाना भी नहीं बनेगा जिसके कारण हमें मजबूरी में खेल दिखाने जाना पड़ता है। जिस दिन हम खेल दिखाने नहीं जाते हैं उस दिन हमारे घर में खाना नहीं बनता है` जब हम खेल दिखाने जाते हैं तो हमें चावल, आटा या अनेक प्रकार का खाने का सामान मिल जाता है और हम आस पास के लोगों से कुछ मांग कर खा लेते हैं जिससे हमारा दोपहर का खाना हो जाता है` बाकी खेल करतब दिखाकर जो थोड़ा बहुत पैसा मिलता है उससे हम शाम को खाना बनाते हैं। जब बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चे से पूछा कि "अगर आपका स्कूल में एडमिशन कराया जाए तो क्या आप स्कूल जायेंगे?" तो उस बच्चे ने बताया कि "नहीं दीदी हम नहीं पढ़ पाएंगे।"

आखिर क्यों होता है हमारे साथ इस तरह का व्यवहार?

रिपोर्टर विजय

यह खबर है गुड़गांव में सड़क एवं कामकाजी बच्चों से सम्बंधित। यहां पर रहने वाले बच्चों ने बालकनामा रिपोर्टर को अपनी समस्याएं विस्तार से बताया है। बच्चों ने बताया है कि यह बच्चे बहुत कम स्कूल जाते हैं। उनके स्कूल नहीं जाने का कारण यह है कि उनके माता-पिता काम पर जाते हैं और वह अपने छोटे बहन भाइयों का ध्यान रखते हैं और घर का काम भी करते हैं। इन बच्चों ने बताया कि "हम पढ़ना तो चाहते हैं लेकिन हम बच्चों पर घर और अपने छोटे भाई-बहनों को सँभालने की जिम्मेदारियां है।'' बच्चों ने बताया हमें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है और हम पढ़ना भी चाहते हैं जब बाकी बच्चे पढ़ने जाते हैं तो हमारा भी बहुत मन करता है स्कुल जाकर पढ़ाई करने का लेकिन हलातों से मजबूर है।

बस्ती में रहने वाले बच्चों ने बताया कि "जब हम सड़क पर जाते हैं तो हमें पुलिस हमे बहुत डांटती है और वह हमारी बात भी नहीं सुनते हैं। जब हम पुलिस को कहीं भी देख लेते हैं तो हमें बहुत डर लगता है। वह हमारे साथ ऐसा क्यों करते हैं वह हमें क्यों डाट ते हैं क्या हमने कोई अपराध किया है? हमें सब को सामान अधिकार क्यों नहीं दिया जाता है। वह हमारी बात क्यों नहीं सुनते हैं? अगर हम सभी बच्चों को शिक्षित किया जाए तो यह अपने साथ होने वाले दुर्व्यवहार से बचेंगे।

बस्ती में रहने वाले बच्चों ने यह भी बताया कि हमारे आसपास खुले में कूड़ा कचरा डाल दिया जाता है जिससे हमेशा बहुत ज्यादा गंदगी रहती है और यहां से बहुत गंदी बदबू आती रहती है। यह गंदी बदबू वातावरण की हवा को दूषित कर देती है और जब हम सांस लेते हैं तो सांस के माध्यम से यह विषैली हवा हमारे शरीर के अंदर जाती हैं और कई तरह की बीमारियां उत्पन्न कर देती है जिसके चलते हम बीमार पड़ जाते हैं और हमें घर पर ही रहना पड़ता है। हम पढ़ाई से वंचित रह जाते हैं।

हमारे आसपास की जगह को साफ सुथरा किया जाए जिससे हम बीमारी से बच सकें और अपनी शिक्षा को नियमित रूप से कर सकें और सब बच्चों की तरह हम भी स्कूल जाएं।

क्या यह सुविधा मिल पाएगी सड़क एवं कामकाजी बच्चों को ?

बातूनी रिपोर्टर आजाद व रिपोर्ट किशन

हमारे बालकनामा पत्रकार ने नोएडा के कुछ स्थानों पर रह रहे सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत किया। इस दौरान बच्चों की समस्याओं पर भी चर्चा किया` जैसा कि आप सब जानते हैं पढ़ाई लिखाई से बच्चों का भविष्य बनता है और यदि हम पढ़ाई लिखाई करने के लिए स्कूल ना जाएं तो कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है` ऐसे ही हमारे पत्रकारों ने विकास (परिवर्तित नाम) से कुछ बातचीत किया जो काफी समय से अपने परिवार के साथ नोयडा में सड़कों के किनारे रहता है। विकास ने साझा किया कि "जिस स्कूल में मैं शिक्षा प्राप्त करता था वह स्कूल कक्षा 5 तक ही है आपको तो पता ही है जब हम 6 कक्षा में दाखिला करवाते हैं तो हमें दूसरे स्कूल में जाना

पड़ता है और जिस स्थान पर मैं रहता हूं उस स्थान के आस पास सीनियरसेकेंडरी स्कूल नहीं है। आस पास स्कूल न होने के कारण मुझे मजबूरी में काफी दूर स्थिति स्कूल में दाखिला लेना पड़ा।" विकास ने जानकारी देते हुए बताया कि यहां पर जिन बच्चों के पास अपनी खुद की साईकिल है वह बच्चे तो साइकिल से स्कूल चले जाते हैं और जिन बच्चों के पास साइकिल नहीं है तो यह बच्चे अपना एक ग्रुप बनाकर पैदल जाते हैं। समस्या तब गंभीर हो जाती है जब यदि समूह का एक भी बच्चा किसी कारणवश स्कुल नहीं जा पाता है तो बाकी सभी बच्चे भी स्कूल नहीं जाते हैं क्योंकि स्कूल लगभग 2 मिलोमीटर दूर है और रास्ते में कुत्तों का भी डर लगता है कि कहीं कुत्ते काट ना ले। माता-पिता सुबह 7:00 बजे से पहले ही कामपर चले जाते हैं इसलिए बच्चों को स्कूल तक ले जाने या उनको स्कूल के लिए तैयार करने के लिए घर पर कोई नहीं रहता है। विकास का कहना है कि "जिस स्थान पर कक्षा 6 से स्कूल नहीं है वहां पर स्कूल का निर्माण हो ताकि बच्चों को ऐसी परेशानियों का सामना ना करना पड़े।"

आखिर कब तक ऐसा होगा?

बातूनी रिपोर्टर जिशांत व रिपोर्टर सौरव

यह खबर नोएडा की झुग्गी बस्तियों से है बालकनामा पत्रकार ने बच्चों के घर पर विजिट किया तो 12 वर्षीय समीर (परिवर्तित नाम) बालक जो आस पास की झुग्गियों और एरिया में कूड़ा कबाड़ा बीनने का काम करता था। वह बहुत दिन से नन्हे परिंदे (मोबाइल एजुकेशन वेन) पर पढ़ने नही आ रहा था तो बालकनामा रिपोर्टर ने बाकी बच्चों से पता किया तो बच्चों ने कहा कि 'समीर गांव गया है जबकि कुछ ही दिन पहले समीर गांव से वापस आया था। बाकलनामा रिपोर्टर ने समीर के घर पर विजिट किया तो पता चला कि समीर की 23-10-2021 को रोड दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। रिपोर्टर ने फिर बाकी लोगो और बच्चों से समीर के बारे मे बात किया और रोड दुर्घटना का कारण जानने की कोशिश किया। बच्चों ने बताया कि समीर रोड पार कबाड़ा चुनने जा रहा था लेकिन उसने ट्रैफिक लाइट की हरी बत्ती नहीं देखि और उसी समय एक बाइक तेजी से आई और उस से समीर को ठोकर लग गई। समीर के सर में में बहुत ज्यादा चोट आई थी फिर समीर को हॉस्पिटल में भर्ती किया। हॉस्पिटल में 5 दिन एडमिट रहा फिर वो खत्म हो गया था। बाइक चालक अभी जेल में है और समीर के घर वालों का रो रो कर बहुत बुरा हाल है। समीर के पिता लेबर का काम करते हैं और माँ कोठियों में काम करती है। समीर के दो भाई और है जो की समीर से बड़े है एक स्कूल जाता और एक घर का काम करता है दो बड़ी बहन है उन की शादी हो गई है।

इस बच्चे की बहादुरी तथा मानसिकता को सलाम

बातूनी रिपोर्टर राहुल व रिपोर्टर शम्भू

यह खबर नोएडा की एक बस्ती से है और इस बस्ती से एक बाल साथी अजय (परिवर्तित नाम) ने बहुत ही अच्छा काम किया और अपनी सूझ बुझ से लोगों की मदद किया। अत्यधिक वर्षा के कारण बस्ती में पानी भर गया था तो अजय ने अपनी बस्ती में पास ही एक पेड़ गाड़ा और गड्ढा बनाकर बारिश के पानी को पेड़ के उगने के इस्तेमाल में लाया। जब बच्चे से पूछा कि "आप यह पेड़ क्यों लगा रहे हैं तो अजय ने बताया की पेड़ लगाने से छाया मिलेगी तथा मैं झुग्गी में रहता हूं और आसपास पेड़ भी नहीं है जिससे बहुत गर्मी होती है अगर मैं पेड़ लगाऊंगा तो कुछ ही वर्षों में पेड़ बड़ा हो जाएगा जिससे छाया मिलेगी और हम गर्मी से भी बच सकेंगे` मेरे पापा रिक्शा चलाते हैं और उनके पास इतने पैसे नहीं है कि पंखा या कूलर खरीद सकें इसलिए गर्मी से बचने के लिए मैं पेड़ लगा रहा हूं।"

क्यों होता हैं हमारे साथ ऐसा?

रिपोर्टर पूनम

यह खबर आगरा शहर के मारवाड़ी इंदिरानगर डेरा बस्ती में रहने वाले बच्चों से सम्बंधित है बालकनामा पत्रकार ने बच्चों के साथ बैठक किया और बच्चों से उनकी परेशानियों पर चर्चा किया और चर्चा के दौरान बच्चों ने अपनी परेशानियां साझा किया। जब बालकनामा पत्रकार ने विस्तार से बच्चों की समस्या को जानने का प्रयास किया तो 12 वर्षीय मुस्कान (परिवर्तित नाम) मारवाड़ी इंदिरा नगर में रहती हैं और चर्चा के दौरान उसने साझा किया कि 'यहाँ पर बच्चे कछपुरा सरकारी स्कूल पढ़ने जाया करते थे और जब हम बच्चे स्कूल में प्रवेश करते थे तो वहां के बच्चे हमें नीची जाति के बच्चे कह कर चिल्लाया करते थे और जब हम उनसे कुछ कहते थे तो वह बच्चे हमारे साथ मार पीट करते हैं।' जब हमने अपनी परेशानी माता-पिता को बताया और हमारे माता पिता ने स्कुल अध्यापक से इस सम्बन्ध में चर्चा किया तो उन्होंने कहा कि 'यह बच्चों का आपसी मामला है इसमें हम कुछ नहीं कर सकते है।' अध्यापक ने बच्चों को समझाया भी नहीं और वह बच्चों हमे रोज परेशान करते थे इसलिए हमने मारवाड़ी इंद्र नगर डेरा बस्ती के कई बच्चों ने स्कूल ही जाना छोड़ दिया। इस स्कुल के अलावा हमारे आस-पास क्षेत्र में कोई सरकारी स्कूल नहीं है और हमारे माता पिता प्राइवेट स्कूल का खर्चा उठा नहीं सकते क्योंकि हमारे माता-पिता की आमदनी इतनी नहीं है कि वे प्राइवेट स्कूल का खर्चा उठा सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

स्वस्थ रहने की जगह बनी बीमारियों का अड्डा !

बातूनी रिपोर्टर रीफा व रिपोर्टर रवि

दोस्तों बरसात में जगह-जगह पर पानी भर जाना आम बात है। लेकिन उस पानी की निकासी करना और उस पानी में किसी भी तरह के कीड़े मकोड़ों का पैदा ना हो इस पर ध्यान रखना आम बात नहीं है। बल्कि इसको बड़ी गंभीरता से लेना चाहिए। क्योंकि इन वजह से ना सिर्फ लोगों को आने-जाने में कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ता है बल्कि वहां रहने वाले बच्चों को मजबूरीवश कीचड़, गंदगी और कई तरह की परेशानियों के बीच में अपना जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। वर्तमान समय में सबसे गंभीर रोग डेंगू होने का भी खतरा लगातार बना रहता है और यही बात बताने के लिए आज हमारे बीच हमारे बातूनी रिपोर्टर रिहाना (परिवर्तित नाम) धर्मपुरा शास्त्री पार्क से एक स्टोरी साझा कर रही हैं। रिहाना बताती हैं कि "उनके एरिया शास्त्री पार्क में एक छोटा पार्क है जहां पर बरसात में पानी जमा हो जाता है और चिंता की बात यह है कि अगर पार्क में ज्यादा लंबे समय तक पानी भरा रहता है तो उसमें कई तरह के कीड़े मकोड़े पनपने लगते है` इस पार्क में पानी निकासी और साफ सफाई की जिम्मेदारी लोकल अथॉरिटी की होने चाहिए लेकिन वह ऐसा नहीं करते बल्कि पार्क के दरवाजे पर ही इतना सारा कूड़ा डाल देते है और कई कई हफ्तों तक उस कूड़े को उठाते भी नहीं है और उस कूड़े में भी काफी सारे कीड़े पनपने लगते हैं। और इसी पार्क में बच्चे खेलने आते हैं जिन्हें लगातार डेंगू और मलेरिआ जैसी कई प्रकार की गंभीर बीमारियां होने का खतरा बना रहता है। इस मौसम में डेंगू मलेरिया बहुत ज्यादा फैलता है तो इस बात से और भी ज्यादा चिंता बढ़ जाती है। यह बच्चे लोकल अथॉरिटी से निवेदन करते है कि कृपया करके पार्क को साफ सुथरा कराने की कृपा करें ताकि वहां आने वाले बच्चे एवं बड़े सभी स्वस्थ रह सकें।

भर रहें हैं उड़ान नन्हे परिंदे

रिपोर्टर रवि

दोस्तों हमेशा से ही हमने देखा है कि अगर किसी बच्चे को शिक्षा प्राप्त करनी हैं तो उसे कड़ी म्हणत के साथ ही साथ रोजाना स्कूल जाकर भी पढ़ाई करनी होती है फिर चाहे वह बच्चा स्कूल से कितनी ही दूरी पर क्यों ना रहता हो। फिर चाहे उस बच्चे को स्कूल तक जाने के लिए कितनी ही नदी-नाले पार करके क्यों ना आना पड़े। लेकिन शिक्षा प्राप्त करनी है तो बच्चों को स्कूल जाना ही होता है। काफी बच्चे ऐसे होते हैं जिनके पास सुविधाएं होती है और वह बच्चे स्कूल भी जाते हैं। लेकिन हमारे समाज में ऐसे भी कुछ बच्चे है जो बेसिक सुविधाओं से भी वंचित है और इसलिए वे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं और स्कूल नहीं जा पाते ।लेकिन आज हम आपको एक ऐसे स्कूल के विषय में बताने जा रहे हैं जो कि खुद चलकर बच्चों के पास जाता है ।जी हां बिल्कुल सही सुना ! एक ऐसा स्कूल जो न कि सिर्फ बच्चों के पास खुद जाकर उन्हें शिक्षा प्रदान करवाता है बल्कि उसमें भी वह सभी सुविधाएं उपलब्ध है जो एक स्कूल में होती है। तो चलिए हम इसके बारे में विस्तार से बताते हैं ।इस स्कूल का नाम नन्हे परिंदे - चलती फिरती वैकल्पिक शिक्षा` यह स्कूल चेतना संस्था, गौतम बुद्ध नगर पुलिस और एच. सी.एल.फाउंडेशन के सहयोग से नोएडा के अलग अलग इलाकों में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों तथा उन बच्चों के लिए जो बच्चे किसी भी प्रकार की परेशानियों की वजह से स्कूल और पढ़ाई दोनों से वंचित हैं उनको शिक्षा प्रदान करती है` इस स्कूल की खास बात यह है कि यह स्कूल उन झुग्गियों झोपड़ियों के पास मिनी वेन के माध्यम से शिक्षा और उससे जुड़े साधन प्रदान करवाता है। इस वेन में बच्चों के लिए बैठ कर पढ़ाई करने के लिए कुर्सी और टेबल की भी सुविधा उपलब्ध है और साथ ही साथ हाथों को धोने के लिए पानी जैसी और भी कई अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं। एक एजुकेशन वेन एक दिन में दो बस्तियों को कवर करती है और वहां रहने वाले बच्चों को शिक्षा प्रदान करवाती है। इसके अलावा बच्चों के लिए पढ़ाई के बाद हल्का-फुल्का रिफ्रेशमेंट का प्रबंध भी किया जाता है। तो देखा दोस्तों आपने कितनी लाजवाब है यह नन्हे परिंदे एजुकेशन वेन।आप इस वेन के विषय में अगर कुछ कहना चाहते हैं।तो हमारे बालक नामा की वेबसाइट पर जा कर कमेंट करें।

छोटी सी उम्र में घर की जिम्मेदारी

बातूनी रिपोर्टर शहजाद व रिपोर्टर किशन

हमारे जीवन में कामकाम करना और कमाना एक महत्वपूर्ण कार्य है। हम यह भी जानते हैं यदि हम एक कार्य कर रहे हैं यदि उस कार्य को करने में हमें कोई लाभ नहीं हो रहा है तो हम दूसरा कार्य करने का विचार करते हैं। ऐसे ही हमारे पत्रकारों ने नोएडा के एक बस्ती में रह रहे कुछ सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत किया और उनकी समस्याओं पर चर्चा किया। तो 16 वर्षीय साहिल (परिवर्तित नाम)ने बताया कि "हम बिहार के रहने वाले हैं और हम वर्तमान में नोएडा मेंझुग्गी में रहते हैं, मेरे पिताजी और मैं गुब्बारे बेचने का कार्य करते थे हमें सुबह के 4:00 बजे 15 किलोमीटर दूर गुब्बारे बेचने जाना पड़ता था और हम अपने आसपास की ट्रैफिक लाइट पर गुब्बारे बेचने के लिए जाते थे तो वहां पर पहले से ही कुछ व्यक्ति लोग बेच रहे होते थे और हमारे गुब्बारे अधिक मात्रा में नहीं बिक पाते थे इस कारण हमें दूर गुब्बारे बेचने के लिए जाना पड़ता था। अब वर्तमान में मैंने गुब्बारे बेचने का कार्य बंद कर दिया है और अब में नर्सरी में कार्य कर रहा हूँ। मुझे महीने के 120 रुपए मिलते हैं` " वर्तमान में सोहेल के पिताजी ने भी गुब्बारे बेचने का कार्य बंद कर दिया है क्योंकि वर्तमान में ज्यादा गुब्बारे बिक नहीं पा रहे हैं जो कि अब घर की पूरी जिम्मेदारी साहिल के कंधो पर ही है और उसकी छोटी से कमाई से ही घर का खर्चा किसी तरह चल पाता है।

बाल दिवस पर दो और वैक्लपिक शिक्षा वैन का उद्घाटन

रिपोर्टर किशन

14 नवंबर 2021 को बाल दिवस के मौके पर गौतम बुध नगर पुलिस, एचसीएल फाउंडेशन और चेतना संस्था के सहयोग से नोएडा में चलाए जा रहे नन्हे परिंदे कार्यक्रम के तहत दो और वैक्लपिक शिक्षा वैन का उद्घाटन पुलिस कमिश्नर आलोक सिंह जी ने किया। दोनों वैन नोएडा के सेक्टर 101 सेक्टर 70 सेक्टर 62 जैसे स्थानों पर जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा प्रदान करेगी। इस पहल को आगे बढ़ाते हुए नोएडा में जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा देने की शुरूआत की गई है। पुलिस कमिश्नर कार्यालय सेक्टर 108 में ओपन बेसिक एजुकेशन में उच्च अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए और बच्चों को स्वेटर भी वितरित किए गए। पुलिस कमिश्नर ने बताया कि "इस पहल से शिक्षा से वंचित सड़क और कामकाजी बच्चों को शिक्षा से जोड़ा गया है और साथ ही साथ 69 बच्चों का स्कूल में दाखिला कराया गयो यह वैक्लपिक शिक्षा वैन एलसीडी स्क्रीन, साउंड सिस्टम, सीसीटीवी कैमरे और सेनिटाइजर जैसी सुविधाओं से परिपूर्ण है। प्रत्येक वैन निर्धारित स्थानों पर स्थानीय पुलिस के सहयोग से रोज 50 से 60 बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराती है नरेंद्र भूषण जी ने एचसीएल फाउंडेशन, पुलिस कमीशनरेट और चेतना एनजीओ को बधाई देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा बच्चों को योजना के दायरे में लाकर इसका विस्तार किया जाना चाहिए। मौके पर आकांक्षा सिंह जी, अपर पुलिस आयुकत मुख्यालय पुष्पांजलि देवी आदि भी मौजूद रहे।

खाने के लालच में बच्चों करते काम

बातूनी रिपोर्टर रितिक व रिपोर्टर सौरव

यह खबर नोएडा सेक्टर-52 की है जब बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन कराया तथा बच्चों की परेशानियों पर चर्चा की तो बातूनी रिपोर्ट रितिक (परिवर्तित नाम) ने बताया कि यहाँ पर बच्चें रात को मार्कीट में ठेलिया पर काम करते है जैसे प्लेट उठाना और उन्हें साफ करना। दुकानदार बच्चों से रोड की साफ सफाई करवाते है और बदले में इन बच्चों को एक वक्त का खाना उपलब्ध कराते हैं और पैसे नहीं देते हैं । बच्चे भी एक वक्त के खाने के कारण काम करते हैं। बच्चे शाम को 6 बजे दूकान पर काम करने के लिए जाते है। रात को 10 बजे अपने घर पर आते है। बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से बात की तो उन्होंने बताया कि 'हमारे पड़ोस में ही अंकल रहते है। हम उनके साथ ही काम पर जाते हैं।' फिर रिपोर्टर ने पूछा कि 'आपको काम के बदले कितने पैसे मिलते हैं?' आरिफ (परिवर्तित नाम) ने बताया कि 'हमे काम के बदले फिक्स पैसे नहीं मिलते हैं, कभी कभार अंकल 50 रुपए दे देते है या हमे रात का खाना खिला देते हैं इसलिए हम रात में इनके साथ काम पर चले जाते हैं।'

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

स्टेकहोल्डर मीटिंग में विस्तार से चर्चा किया गया बच्चों के भविष्य के बारे में

बढ़ते कदम के सदस्यों ने अपना शॉर्ट फॉर्म चित्र के माध्यम से दशार्या

कामकाजी बच्चों ने बड़ी ही धूमधाम से मनाया क्रिसमस डे

बाल यौन शोषण चर्चा के मीटिंग के दौरान बालकनामा के साथियों ने रखी सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बात

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471